

वेशकार पुं. (तत्.) 1. पहनने के वस्त्र बनाने का काम करने वाला व्यक्ति, दर्जी, पोशाक बनाने वाला 2. पुतलियाँ बनाने और उन्हें सजाने वाला व्यक्ति।

वेशधारी पुं. (तद्.) दूसरे का वेश धारण करने वाला, कपट रूप धारी, कपटी, छद्म वेशी।

वेशन पुं. (तत्.) प्रवेश करना, प्रवेश द्वार, घर।

वेशनारी स्त्री. (तत्.) रंडी, वेश्या, वेश वनिता, गणिका।

वेशनी स्त्री. (तद्.) देहरी, पौरी, झ्योढ़ी।

वेशभूषा स्त्री. (तद्.) वेष-भूषा, पहनावा, पोशाक।

वेशर पुं. (तत्.) खच्चर, अश्वतर।

वेशवधु स्त्री. (तत्.) वेश्या, वेश-वनिता, रंडी, गणिका।

वेशवनिता स्त्री. (तत्.) वेश्या, रंडी, वेशनारी, वेशवधू, गणिका।

वेशवास पुं. (तत्.) वेश्या का घर, वेश्यालय, चकला।

वेशवीथी स्त्री. (तत्.) वेश्याओं के घरों वाली गली या बाजार।

वेशी वि. (तत्.) वेश धारण करने वाला।

वेशम पुं. (तत्.) घर, मकान, भवन, निवास स्थान, आवास।

वेश्य पुं. (तत्.) वेश्यालय, रंडीखाना, चकला।

वेश्यांगना स्त्री. (तत्.) वेश्या, रंडी, गणिका।

वेश्या स्त्री. (तत्.) गाने और नृत्य आदि से ग्राहकों का मनोरंजन कर अथवा धन लेकर संभोग करा कर जीविका चलाने वाली स्त्री, रंडी, गणिका, पतुरिया, तवायफ, बाजारू स्त्री।

वेश्यागमन स.क्रि. (तत्.) रंडीबाजी, वेश्या के पास जाकर मनोरंजन करना।

वेश्यालय पुं. (तत्.) वह घर जिसमें वेश्याएँ रहकर पेशा करती हों, चकला, वेश्यागृह, वेश्यावृत्ति का स्थान।

वेश्यावृत्ति स्त्री. (तत्.) 1. वेश्या बनकर अर्थात् धन, वस्तु या अन्य लाभ लेकर पर पुरुषों से संभोग कराना 2. किसी गुण, शक्ति आदि का बहुत ही बुरी तरह से होने वाला अनुचित और बुरा उपयोग।

वेष पुं. (तत्.) 1. वेश, पहने हुए वस्त्र आदि 2. रंगमंच में नेपथ्य 3. वेश्या का घर, वेश्यालय।

वेषकार पुं. (तत्.) वेष्टन, बेठन।

वेष्ट पुं. (तत्.) 1. घिराव, लपेटन, लिपटना, लिपटाव, पगड़ी का घेरा, अहाता 2. गोंद, राल 3. तारपीन।

वेष्टक पुं. (तत्.) प्राचीन, घेरा, वेष्ट, परकोटा, चारदीवारी, आवरण, वृक्ष की छाल, वल्कल वि. चारों ओर से घेरने/लपेटने वाला व्यक्ति, वेष्टन करने वाला; पुलिंदा बाँधने वाला, बंडल बनाने वाला; पगड़ी।

वेष्टन पुं. (तत्.) 1. वह कपड़ा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाए, वेठन 2. घेरने या लपेटने की कमरबंद पटका, क्रिया या भाव, बैठन, घेरना, लपेटना, चाबी देना, उमँठना, मरोड़ना 3. उष्णीष, पगड़ी, साफा 4. गुग्गुल 5. कान का छेद 6. नृत्य का भाव विशेष।

वेष्टित वि. (तत्.) किसी चीज से छेदा या लपेटा हुआ, घिरा हुआ, अवर्द्ध।

वेसर पुं. (तत्.) दे. वेशर।

वैंध्य पुं. (तत्.) विंध्य पर्वत से संबंधित, विंध्या चल का, विंध्याचल पर उत्पन्न या वहाँ से प्राप्त, विंध्याचल का निवासी।

वै स्त्री. (तद्.) 1. बाय, बैसर, कंधी (जुलाहे वाली) 2. दो, दोनों देश. (प्रत्य) भी (शब्दों के अंत में) जैसे- कुछवै याने कुछ भी, कुछ ही अव्य. अव्यय विशेष जिसका प्रयोग निश्चय या स्वीकारोक्ति के अर्थ में किया जाता है, कभी-कभी यह संबोधन और अनुनयद्योतक भी होता है।

वैकट्य पुं. (तत्.) विकटता।